सफ़रनामा – कागज़ से स्क्रीन तक

शरद सिन्हा*
अलका**

पत्तों और पत्थरों पर लिखे गए पुस्तकों सरीखे वे इतिहास और फिर लिखाई की खोज और पुस्तकों का आज का प्रारूप, इस प्रक्रिया में मानव के बीस शताब्दियों के परिश्रम, अनुभव एवं खोज का सार छुपा हुआ है। गुटनबर्ग के जमाने की किताबों से लेकर आज तक की किताबों ने एक लंबा सफर तय किया है। निरंतर परिवर्तन, प्रगति और ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों तक सूचना पहुँचाने की आवश्यकता के कारण अब ई-किताबों का उद्‌भव हो चुका है। किताबों का यह नया स्वरूप केसा है एवं यह किस प्रकार उपयोगी है? यह बताने का प्रयास इस लेख के माध्यम से किया गया है।

अगर देखा जाए तो हमारे चारो ओर का वातावरण या यूँ कहा जाए कि यह पूरी दुनिया ही एक किताब पढ़ने के समान है। अगर हम अपना मुल्क, अपना गाँव छोड़कर कहीं घूमने नहीं गए तो लगेगा कि हमने किताब के कुछ सफे (पृष्ठ) ही पढ़े हैं।

किताबों और पढ़ाई का संबंध बहुत पुराना है। स्कूल, पढ़ाई, उन्नति इन सभी को किताबों से अलग कर पाना मुश्किल प्रतीत होता है। वस्तुत: किताबें हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी हैं–

''किताबों में इतना खजाना छुपा है, जितना लुटेरा कभी लूट नहीं सकता''

–(वाल्ट डिज़्नी)

यदि विश्व के तीन महानतम आविष्कारों की बात की जाए जिन्होंने मानव सभ्यता की दिशा में परिवर्तन लाने का कार्य किया है तो वे हैं आग, पहिया और लिखाई।

आधुनिक काल में लिखाई की जो कला है, वह वैदिक काल और आदि काल में नहीं थी। वैदिक काल में लिखाई का काम ताम्रपत्रों और प्रस्तरों (पत्थरों) की शिलाओं पर खुदाई करके किया जाता था। यह काम इतना कठिन था कि बहुत ही कम सामग्री इस प्रकार सुरक्षित रह पाती थी। अशोक कालीन शिलाओं के जो स्तंभ खुदाई में प्राप्त हुए हैं, इसका एक अच्छा उदाहरण है।

बहुत अधिक स्पष्ट नहीं है परंतु एक ऐसा विचार है जो विश्व में माना जाता है कि–सुमेर

* *ऐसोसिएट प्रोफ़ेसर,* आर.एम.एस.ए, प्रोजेक्ट सैल, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली
** *जे.पी.एफ,* अध्यापक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

Bhartiya Adhunik Shiksha - January 2014.indd 72 09-04-2015 AM 11:08:19

अशोक कालीन शिलालेख
(http://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/ 4/45/6th Pillar of Ashoka. JPG)

राज्य (मिस्र) में लगभग आठ हज़ार ईसापूर्व छोटे-छोटे मिट्टी के तिकोने गोलाकार, शंकुकार टुकड़ों को भेड़ों को चित्रित करने के लिए और अनाज को नापने के लिए, तेल को रखने के लिए प्रयोग किया जाता था। ये मिट्टी के विभिन्न आकार के टुकड़े टोकन का कार्य करते थे। 3000 ई. पू. टोकनों को खोखली मिट्टी की गेंदों में रखकर सील कर दिया जाता था। फिर उनके ऊपर खरोंचकर कुछ निशान बनाए जाते थे। वस्तुतः यह लिखने की प्रक्रिया की शुरुआत मानी जा सकती है। 3100 ईसा पूर्व सुमेर वासियों ने अंकों का आविष्कार किया और तब भेड़ों की संख्या और भेड़ों के लिए प्रयोग किया जाने वाला चिह्न अलग होने लगा। चीन में शेंग वंश के समय की लिखाई काँसे और हड्डियों पर और कछुओं के बाहरी आवरण पर भी लिखाई के सबूत मिले हैं। (www.wikipedia.org/wiki/ history of writing)

चीन में कछुए के बाहरी आवरण पर लिखाई
(http://kids.britannica.com/comptons/ art-110197/A-tortoise-shell-from-Chinas-Shang-period-between-about-1600)

वैराक्रुज (मैक्सिको) में भी पत्थर की पट्टियों पर लिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं। भारत में भी सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान लगभग

2600 ई. पू. की लिपि पाई गई है, जो कि अब तक समझी नहीं जा सकी है। और यह मिट्टी के बर्तनों पर तथा विभिन्न प्रकार की मौहरों पर पाई गई है। बाद में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का उद्‌भव हुआ और कई धार्मिक पुस्तकें एवं प्रशासनिक दस्तावेज़ इसमें लिखे गए एवं यह लिपि राजसी मौहरों एवं सिक्कों पर भी पाई गई है। (www.historian.net/hxwritehm)

लिखाई के सबूत विभिन्न सभ्यताओं में कभी पत्थर पर, कभी ताम्र पत्रों पर, पत्तियों पर, तथा गुफाओं आदि की दीवारों पर चिह्नों के रूप में पाए गए हैं। इन ताम्रपत्रों और शिलाओं पर मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए बहुत बड़ा स्थान और सुरक्षा-व्यवस्था चाहिए थी व इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना एक कठिन समस्या थी।

इस प्रकार की लिखित सामग्री को बहुत लंबे समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता था। फिर धीरे-धीरे कागज़ के आविष्कार ने लिखाई के काम को सफलतापूर्वक और लंबे समय तक सुरक्षित रखने में एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय

मध्यकाल में कच्ची स्याही से लिखाई (http://pearlsofprofundity.files.wordpress.com/2013/03/writing-with-a-quill-3.jpg)

भूमिका निभाई। मध्यकाल तक कागज़ पर हाथ से कच्ची स्याही के साथ लिखाई का काम हुआ।

परंतु कच्ची स्याही के साथ हाथ से लिखी हुई सामग्री को भी बहुत अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता था और साथ ही इस प्रकार मुद्रित सामग्री सीमित मात्रा में उपलब्ध होने के कारण इसे आम लोगों तक सुलभ नहीं कराया जा सकता था। छापेखाने के आविष्कार ने इस समस्या का भी समाधान कर दिया। भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन से लिखाई के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। अंग्रेज़ी सरकार ने धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक रूप से भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए यहाँ छापे खाने का आविष्कार किया।

किताबों को पत्थर या मिट्टी पर उकेरने से अधिक जानकारी एक टेबलेट* पर नहीं आ पाती थी, इसलिए ऐसा सोचा गया होगा कि जब हमें बहुत सारे टेबलेट्स को एकत्रित करना होगा तो उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में समस्या होगी एवं उनके संग्रहण में भी कठिनाई आएगी। चीन में कागज़ का आविष्कार होने के बाद उस पर लिखना अधिक सुगम था।

किताबें हमारे जीवन में कैसे आयीं, इसकी भी एक दिलचस्प कहानी है। लगभग पहली शताब्दी ए.डी. में किताब का पर्याय होता था साथ जुड़े हुए पन्ने और किताबों को Codex का नाम दिया गया था (लैटिन भाषा में लकड़ी का टुकड़ा)। पहली शताब्दी ए.डी. से चौथी शताब्दी तक कोडैक्स (Codex) अर्थात् किताबें इसी तरह लकड़ी, मोम अथवा धातु के टेबलेट्स पर लिखी जाती रहीं। 13वीं शताब्दी में जब कागज़ का आविष्कार हुआ

*लकड़ी या पत्थर का (चौकोर, गोलाकार, या तिकोना) टुकड़ा, जिस पर लिखा जाता था।

तब भी किताबों का उत्पादन एक जटिल प्रक्रिया थी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कागज़ के पन्नों पर हाथ से लिखा जाता था एवं कई बार अक्षरों को रंगों, सोने और चाँदी से मढ़ा जाता था। एक किताब बनाने में महीनों से सालों तक लग जाते थे। यह कार्य इतना कठिन था कि सिर्फ धार्मिक किताबें ही इस प्रकार बन पायीं। www.wikipedia.org/wiki/publishing)

किताबों के बड़े पैमाने पर उत्पादन की प्रक्रिया गुटनबर्ग (Gutenberg) द्वारा प्रिंटिंग प्रैस के आविष्कार के बाद शुरू हुई और पहली किताब जो गुटनबर्ग के प्रेस से छपी वह थी–बाइबिल। क्योंकि गुटनबर्ग एक सुनार के परिवार से संबंध रखते थे, इसलिए वे धातु की ढलाई के कार्य में भी दक्ष थे और इसी दक्षता से उन्होंने ऐसे अक्षर जिन्हें कि बार–बार विभिन्न प्रकार से इस्तेमाल किया जा सकता है, धातु में ढालकर बनाए। चीनियों ने भी इस प्रकार के अक्षर गुटनबर्ग से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले बना लिए थे और उस पर निरंतर सुधार कर रहे थे, पर भाषा, धर्म, संस्कृति के प्रतिबंधों के चलते वह इनका विश्व में प्रचार–प्रसार नहीं कर पाए। (www.wikipedia.org/wiki/publishing)

भारत में भी भोजपत्रों पर लिखने की परंपरा का उल्लेख है एवं ऐतिहासिक स्मारकों पर विभिन्न लिपियों में पाए गए शिला लेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि लेखन की परंपरा भारत वर्ष में भी रही है। भारत में वैदिक काल से ही भोजपत्र पर लिखने की परंपरा थी। ऐसा माना जाता है कि ऋग्वेद की ऋचाएँ स्मृति के आधार पर ही पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे ले जायी जाती रहीं। फिर ताम्र पत्रों पर लिखकर इन्हें लिपिबद्ध किया गया।

आज किताबें जिस रूप में हमारे सामने हैं, वस्तुतः यह प्रिंटिंग पब्लिशिंग व्यवसाय में निरंतर उन्नति के बाद संभव हो पाया है। तकनीकी विकास के कारण किताबों को कम दामों में उपलब्ध कराना एवं सब लोगों तक पहुँचाना संभव हो पाया है। किताबों का यह स्वरूप हमारे समक्ष वर्षों से चला आ रहा है। इन कागज़ पर छपी किताबों में असीमित ज्ञान का भंडार छुपा हुआ है। यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि हमारी उन्नति का मजबूत आधार स्तंभ ये किताबें ही हैं।

भारत में प्रकाशन संस्थानों की संख्या लगभग 200 है। हर वर्ष छपने वाली 1 लाख किताबों की लगभग 25 प्रतिशत हिंदी, 20 प्रतिशत अंग्रेज़ी एवं बाकी अन्य भाषाओं में होती है। भारत आज विश्व का एक बड़ा पुस्तक बाज़ार है। यहाँ मुद्रित पुस्तकों का बाज़ार अनुमानतः 10 हज़ार करोड़ रुपये है, शेष हिस्सा अखबार एवं पत्रिकाओं का है। समय के साथ पढ़ने की आदतों में भी बदलाव आया है। युवा वर्ग धर्म, ज्ञान की अपेक्षा केरियर एवं पर्सनॅलिटी डेवेलपमेंट की किताबों में अधिक रुचि ले रहे हैं। मध्य वर्गीय साक्षर भारतीयों की अपनी अलग संस्कृति है, बढ़ती आय के कारण इस वर्ग की व्यय करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। फिर भी पुस्तकों पर प्रति व्यक्ति व्यय मात्र ₹80 है जबकि इंग्लैंड में यह ₹4000 प्रति व्यक्ति है। (श्रीनाथ सहाय, *किताबें छप रहीं हैं और खूब बिक भी रही हैं, नवभारत टाइम्स,* नयी दिल्ली, 2 दिसंबर 2013)

सूचना एवं तकनीक के क्षेत्र में होने वाले नये क्रांतिकारी परिवर्तनों से पढ़ने की आदत में बहुत परिवर्तन हुआ है। किताबों से पढ़ने की आदत में चहुँ ओर निरंतर गिरावट आ रही है।

सूचना तकनीकी पर आधारित विभिन्न उत्पादों में से कुछ ने किताबों की जगह तेज़ी से लेना शुरु कर दिया है।

पर्यावरणविदों ने भी पेड़ों की घटती संख्या के लिए कागज़ का अंधाधुंध प्रयोग भी एक कारण बताया है। बढ़ती जनसंख्या एवं साक्षरता की बढ़ती दरों ने कागज़ और किताबों की माँग को कई गुना बढ़ा दिया है। इस तरह यदि कागज़ की खपत बढ़ती रही तो हमें किताबों को बनाने के लिए पेड़ों के अलावा अन्य विकल्पों की तलाश करनी होगी।

'ई-किताब' किताबों का इलैक्ट्रॉनिक या डिजिटल फॉरमैट का प्रारूप है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार छपी हुई किताबों के इलैक्ट्रॉनिक संस्करण को ई-किताब कहते हैं। ई-किताब को आम तौर पर किसी परिष्कृत इलैक्ट्रॉनिक डिवाइस, जैसे-कंप्यूटर, स्मार्ट-फोन और कई मोबाइल फोन के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। कुछ कंपनियाँ पी.सी. के साथ ई-किताबों को पढ़ने का सॉफ्टवेयर प्रदान करती हैं। पहली ई-किताब *'इंडैक्स थॉमिस्टिकस'* (Index Thomisticus) थी जो कि 1949 में ऐंजला रुइज़ (Angela Ruiz) नाम की एक स्पेनिश महिला ने पेटेंट करवाई थी। उन्होंने देखा कि बच्चे स्कूल में बहुत-सी किताबें उठाकर लाते थे। किताबों का बोझ कम करने के लिए उसने ई-किताब लिखी। कुछ इलैक्ट्रॉनिक किताबें 1960 में भी बनाई गईं। 1992 में कुछ व्यावसायिक कंपनियों द्वारा इलैक्ट्रॉनिक बुक रीडर बनाए गए जो कि सी.डी. में एकत्रित की गई ई-किताबों को पढ़ने में सक्षम थे। (www.wikipedia.org/wiki/publishing)

ई-किताबों का बाज़ार निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। ई-किताबों के बाज़ार में आते ही ई-पब्लिशर भी बाज़ार में आ गए हैं। ई-किताबों को पढ़ना, साथ ले जाना बहुत आसान है, इसलिए इनकी माँग दिनोदिन बढ़ती चली जा रही है। ई-बुक रीडर एक इलैक्ट्रॉनिक गजट है जो कि खासतौर से ई-किताबें पढ़ने के लिए ही बना है। सामान्यत: ई-बुक रीडर लगभग छ: इंच लंबा एक पॉकेट की तरह होता है और इसे कहीं भी पढ़ा व ले जाया जा सकता है। इसमें लगभग दो जी. बी. मैमोरी होती है। इनकी कीमत लगभग छ: हज़ार से पच्चीस हज़ार तक होती है। ई-बुक में एम.पी. थ्री म्यूजिक, कंप्यूटर गेम्स या सॉफ्टवेयर जैसी दूसरी डिजिटल सामग्री को डाउनलोड, स्टोर, ट्रांसफर या ई-मेल किया जा सकता है। किताब

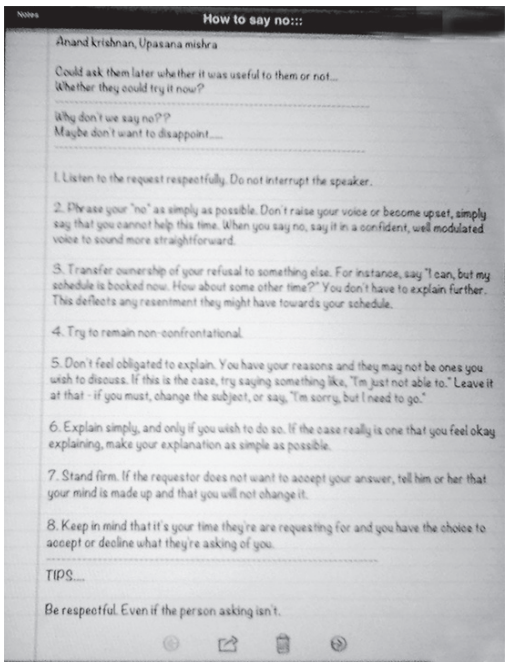
Notes

How to say no:::

Anand krishnan, Upasana mishra

Could ask them later whether it was useful to them or not...
Whether they could try it now?

Why don't we say no??
Maybe don't want to disappoint.....

1. Listen to the request respectfully. Do not interrupt the speaker.

2. Phrase your "no" as simply as possible. Don't raise your voice or become upset, simply say that you cannot help this time. When you say no, say it in a confident, well modulated voice to sound more straightforward.

3. Transfer ownership of your refusal to something else. For instance, say "I can, but my schedule is booked now. How about some other time?" You don't have to explain further. This deflects any resentment they might have towards your schedule.

4. Try to remain non-confrontational.

5. Don't feel obligated to explain. You have your reasons and they may not be ones you wish to discuss. If this is the case, try saying something like, "I'm just not able to." Leave it at that - if you must, change the subject, or say, "I'm sorry, but I need to go."

6. Explain simply, and only if you wish to do so. If the case really is one that you feel okay explaining, make your explanation as simple as possible.

7. Stand firm. If the requestor does not want to accept your answer, tell him or her that your mind is made up and that you will not change it.

8. Keep in mind that it's your time they're are requesting for and you have the choice to accept or decline what they're asking of you.

TIPS....

Be respectful. Even if the person asking isn't.

किंडल – ई-बुक रीडिंग डिवाइस

की तरह एहसास देने के लिए स्क्रीन का रंग कागज़ की तरह किया जा सकता है और किताबों की तरह पन्ने पलटने की सुविधा भी होती है।

अब 21वीं सदी में ई-किताबें पढ़ने का एक नया माध्यम बन कर उभरी हैं। amazon.com के एक सर्वे के अनुसार पिछले वर्ष लगभग प्रति 100 प्रिंटिड किताबों पर 143 ई-किताबें लिखी गयीं। 2013 में हुए एक शोध के अनुसार- (Under Standing the E consumer) यह अनुमान लगाया गया कि, 2014 में ई-किताबें प्रिंट माध्यम से आगे निकल जाएंगी, अनुमानत: लगभग 47 मिलियन किताबों की बिक्री विश्व में होगी। ई-किताबों की बिक्री प्रिंट माध्यम की किताबों से लगभग 300000 अधिक होगी। ई-किताबों की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि पाठ्यपुस्तकें भी अब ई-रूप में उपलब्ध करायी जाने लगी हैं। (www.publishing technology.com/2013/neilson-research)

रिसर्च यूनिट मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार ''इलैक्ट्रॉनिक रीडिंग डिवाइसिज़ या फिर प्रिंट मिडियम में किताबों से पढ़ने में आँखों को कोई हानि नहीं है।'' (www.amazon.in.)

पुस्तक-प्रकाशन की प्रक्रिया आमतौर पर काफी लंबा समय लेती है, क्योंकि प्रकाशन की प्रक्रिया काफी लंबी होती है। किताब लिखने से लेकर प्रकाशन एवं बाज़ार में आने तक लगभग एक वर्ष से अधिक समय लग जाता है पर ई-किताब का प्रकाशन इससे बहुत कम समय (लगभग एक-से-तीन महीने) लेता है।

ई-पब्लिकेशन एक कम समय लेने वाली प्रक्रिया है, इसलिए किसी भी विषय पर लिखने से पहले यह ज़रूरी है कि उस विषय पर पहले से मौजूद जानकारी हासिल कर ली जाए। यह भी आवश्यक है कि विषय को नवीनतम एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी देखा जाए।

क्योंकि ई-किताब हमारे समक्ष एक पर्यावरण अनुकूल माध्यम बनकर उभरी हैं। अत: इनके बनाने की प्रक्रिया की जानकारी शिक्षा से जुड़े सभी स्टेक होल्डर्स (पणधारियों) को होनी चाहिए। ई- किताब बनाने से पहले ही लेखक इसका मसौदा एक सामान्य किताब की तरह ही बना लेता है। किताब का प्रारूप, भाषा का चुनाव, शब्दों का चुनाव किसी भी अच्छी ई-किताब की पहली आवश्यकता है। ई-किताब में यदि चित्रों की भी गुंजाइश रखनी हो तो चित्र एवं उनका अलंकरण भी पूर्वनिर्धारित किया जाना चाहिए। पृष्ठों पर यदि कोई निर्देश दिए जाने हैं तो उनका भी पूर्वनिर्धारण कर लेना चाहिए। यदि उदाहरणों की आवश्यकता हो तो उन्हें भी पूर्वयोजना के अनुसार अलग-अलग जगहों पर देना चाहिए। विभिन्न भाग खंडों का निर्धारण भी पहले ही कर लिया जाता है।

एक स्पष्ट रूपरेखा बन जाने के बाद यह भी आवश्यक हो जाता है कि पृष्ठ सीमा एवं शब्द सीमा निर्धारित कर ली जाए। यह ड्राफ्ट बनने के बाद सारा कार्य एक वर्ड फाइल में किया जाता है और ई-वर्ज़न सॉफ्टवेयर की मदद से उसे ई-किताब के रूप में परिवर्तित किया जाता है। विभिन्न सॉफ्टवेयर जो कि वर्ड फाइल को

ई-किताब की शक्ल दे सकते हैं, अलग-अलग नाम से उपलब्ध हैं-

(क) सिगिल (code.google.com/p/sigil/)
(ख) ईकब (tinyurl.com/chwessa)
(ग) मोबीपॉकेट (MobiPocketCreation)
(घ) आइपबसॉफ्ट (ipubsoft.com)
(ड़) पी.डी.एफ. फॉर्मेट (portable document format)

कुछ अन्य बातें— ई-किताब के फॉरमैट में फिलहाल कोई मानकीकरण नियम अथवा अंकुश नहीं है। इसलिए पब्लिशर अलग-अलग फॉरमैट में ई-किताब तैयार कर रहे हैं एवं उसी के अनुसार अपना रीडर गैजेट तैयार कर रहे हैं। ई-किताब यदि हिंदी में है तो फॉन्ट यूनिकोड पर आधारित होता है। मंगल या यूनिकोड एम.एस. फॉन्ट बेहतर चुनाव हैं एवं अंग्रेज़ी में टाइम्स न्यू रोमन या एरियल का इस्तेमाल ज़्यादा किया जाता है। इसमें फॉन्ट साइज़ '12' को प्राथमिकता दी जाती है। पूरी किताब में एक ही फॉन्ट का प्रयोग किया जाता है एवं हैडलाइन 16-18 साइज़ तक हो सकती हैं।

ई-किताबों की एक प्रमुख विशेषता जो कि सामान्य किताबों से भिन्न है वह यह है कि इसमें फॉरमेटिंग कम से कम होती है क्योंकि विभिन्न ई-किताब रीडर एक विशिष्ट फॉरमेटिंग प्रारूप का उपयोग करते हैं। कुछ खास किस्म के चिह्न भी ई-किताब फॉरमेटिंग प्रारूप के अनुकूल नहीं हैं। ई-किताब में फोटो (चित्रों) को समाविष्ट करना कुछ कठिन होता है।

शुरू के दो पृष्ठों पर लेखक का नाम-पता, प्रकाशक का नाम-पता, प्रकाशन की तारीख, कॉपी राइट से संबंधित सूचनाएँ, आई.एस.बी. एन. नंबर आदि होते हैं। इसके बाद इंडैक्स भूमिका और मूल विषय-वस्तु होती है। ई-किताब में इंटरनेट लिंक्स भी दिए जाते हैं। ई-किताब में सक्रिय हाइपर लिंक्स भी दिये जाते हैं। ई-किताब को पढ़ने के बाद कई पाठक इन किताबों को पी.डी.एफ. फॉर्मेट मे मुफ़्त में भी अप्लोड कर देते हैं।

ई-किताबों की कीमत कागज़ पर छपी किताबों की कीमत से कम होती है। हालांकि किताब की कीमत का निर्धारण विषय की जटिलता एवं प्रासंगिकता के आधार पर किया जाता है। बाज़ार में उसी विषय पर उपलब्ध अन्य पुस्तकों पर एवं लेखक की लोकप्रियता के अनुसार भी मूल्य का निर्धारण होता है।

सामान्य रूप से किसी भी लिखी हुई सामग्री के डिजिटल रूप को ई-किताबों की श्रेणी में रखा जा सकता है। सामान्य पुस्तकों की अपेक्षा इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से ले जाया जा सकता है। इसी वजह से यह युवा वर्ग में आज के सूचना एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग में माहिर आज के युवा वर्ग की पसंद बन गई है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक इन्हें आसानी से ले जा सकने के कारण इनका प्रयोग करने वालों की संख्या में निरंतर इज़ाफा हो रहा है।

जनसाधारण तक स्कूली पाठ्यपुस्तकों की पहुँच आसान करने के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005* ने पाठ्यपुस्तकों को वेब साइट पर उपलब्ध कराने की सिफ़ारिश की। इस सिफ़ारिश को ध्यान में रखते हुए एन.सी. ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें आज भी www.ncert.nic.in पर उपलब्ध हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों को ई-किताब के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास पेन्टा हाउस नामक प्रकाशन भवन द्वारा किया गया था, लेकिन इसमें पुस्तकों के पेज को स्केन कर डिजिटल प्रारूप में वर्ल्ड वाइड वैब पर प्रषित कर दिया गया था। चूँकि उनमें मुद्रित पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ अन्य नये परिवर्तन नहीं किए गए थे और एन.सी.ईआर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को ही यथावत् रखा गया था, इसलिए यह कोशिश बहुत अधिक प्रचलित नहीं हो पाई।

वर्तमान पीढ़ी, जो कि मुद्रित किताबों को पढ़कर बड़ी हुई है और ई-किताबों से भी रूबरू हुई है, के लिए किताबों से पढ़ने का मोह छोड़ पाना मुश्किल है। लेकिन ई-किताबों के निरंतर प्रचार-प्रसार एवं उनके प्रयोग में सहूलियत के कारण नयी पीढ़ी का लगाव इन्हें पढ़ने में दिनों दिन बढ़ रहा है एवं ई-किताबों के प्रयोगकर्ताओं की संख्या में उत्तरोतर वृद्धि हो रही है।

बदलते परिवेश, तेजी से बदलते शैक्षिक वातावरण और निरंतर गतिशील रहने वाले मनुष्य ने पुस्तकों की उपलब्धता एवं पढ़ने के तौर-तरीकों में बदलाव ला दिया है, ऐसे में ई-किताबें पढ़ने का एक अच्छा विकल्प बनकर उभरी हैं। संचार तकनीकी में तेज़ी से होने वाले विकास के कारण ई-किताबों की उपलब्धता एवं इन्हें पढ़ने में निरंतर वृद्धि हो रही है। ई-किताबों को लाने-ले जाने और पढ़ने में सरलता तथा भंडारण की अधिक क्षमता होने के कारण यह युवा वर्ग में दिनोदिन अधिक प्रचलित हो रही हैं। आने वाले समय में ई-किताबें शिक्षा जगत में पढ़ने-पढ़ाने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरेंगी, एसा अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ

सहाय, श्रीनाथ. किताबें छप रहीं हैं और खूब बिक भी रही हैं, *नवभारत टाइम्स,* नयी दिल्ली, 2 दिसंबर 2013
www.amazon.in.
visual.ly/brief-history-publishing.
www.britannica.com/EBchecked/topic/482597/history of publishing.
www.historian.net/hxwritehm
www.publishing technology.com/2013/neilson-research
www.wikipedia.org/wiki/history of writing
www.wikipedia.org/wiki/publishing.